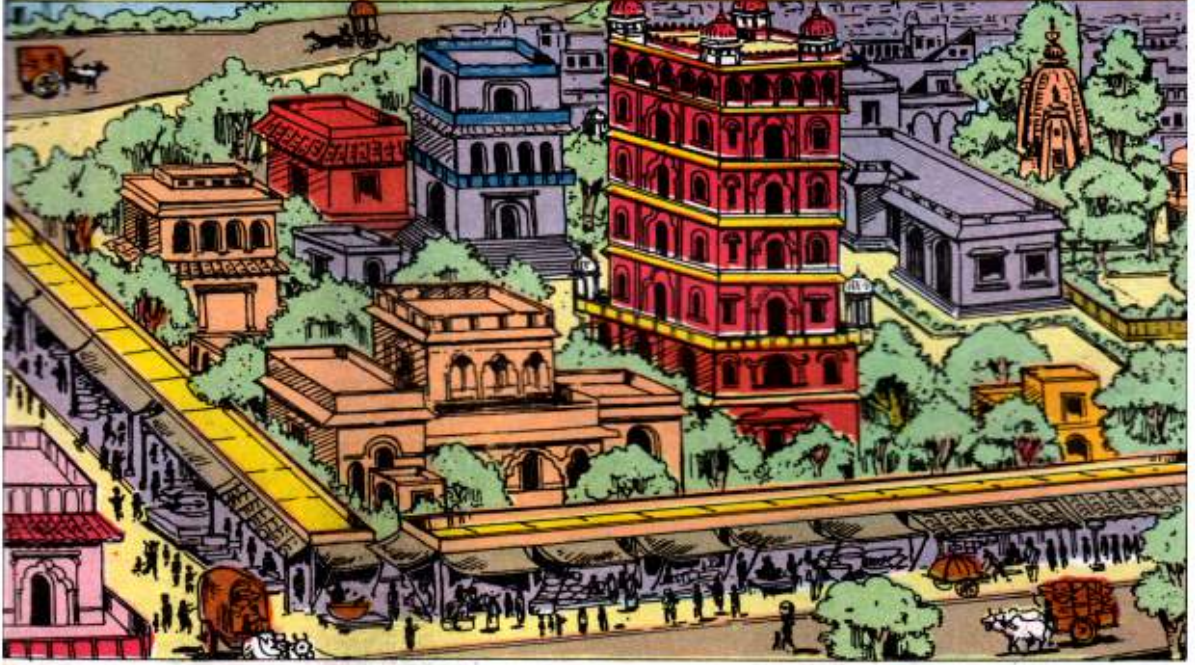
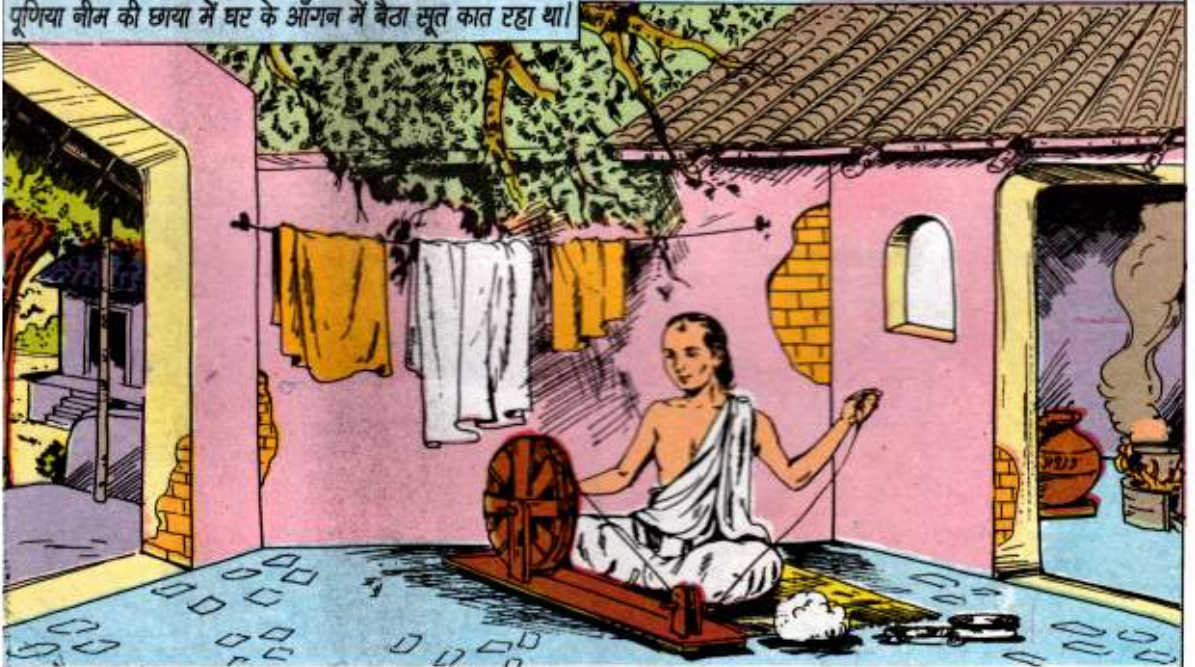


पूणिया श्रावक

राजगृह पूर्व भारत की प्रमुख व्यापारिक नगरी थी। यहाँ गोभद्र सेठ जैसे अनेकों धनकुबेर श्रेष्ठियों की विशाल हवेलियाँ थीं। सुन्दर बाजार, बड़े-बड़े विशाल राजमार्ग और अनेकों रमणीय उद्यानों से इसकी शोभा दर्शनीय थी।



इस राजगृह में पूणिया नाम का एक गरीब गृहस्थ भी रहता था। वह चरखे पर सूत कातकर अपनी गृहस्थी चलाता था। एक दिन पूणिया नीम की छाया में घर के आँगन में बैठा सूत कात रहा था।



तभी उसकी पत्नी समता ने आकर कहा—

स्वामी ! सूरज ढलने ही वाला है, अब सामायिक का समय हो रहा है।



पूणिया उठकर सामायिक की तैयारी में लग जाता है।

दोनों पति-पत्नी वस्त्र बदलकर, पद्मासन में ध्यान लगाकर सामायिक में बैठ गये।

करेमि भन्ते#
सामायि ...



थोड़ी देर बाद पति-पत्नी दोनों नमोत्थुण की मुद्रा बनाकर भगवान की वन्दना करते हैं।

'णमोत्थुण समणस्स भगवओ##
महावीरस्स मम धम्मायटिस्स'



सामायिक पूरी करके उठकर पूणिया पत्नी से बोला—

समता ! आज सामायिक करते हुए मेरे चित्त में बार-बार चंचलता आ रही थी।

स्वामी ! आज पवन नहीं चल रही थी। मच्छर-डांस बार-बार काट रहे होंगे न?



हे भगवन्, मैं सामायिक करता हूँ।

मेरे धर्म गुण भगवान महावीर को नमस्कार हों।



नहीं समता, मैं शरीर की नहीं,
मन की चंचलता की बात कर रहा हूँ।



स्वामी ! हो सकता है आज
बाजार में आपको किसी ने
कठोर वचन कह दिये हों।

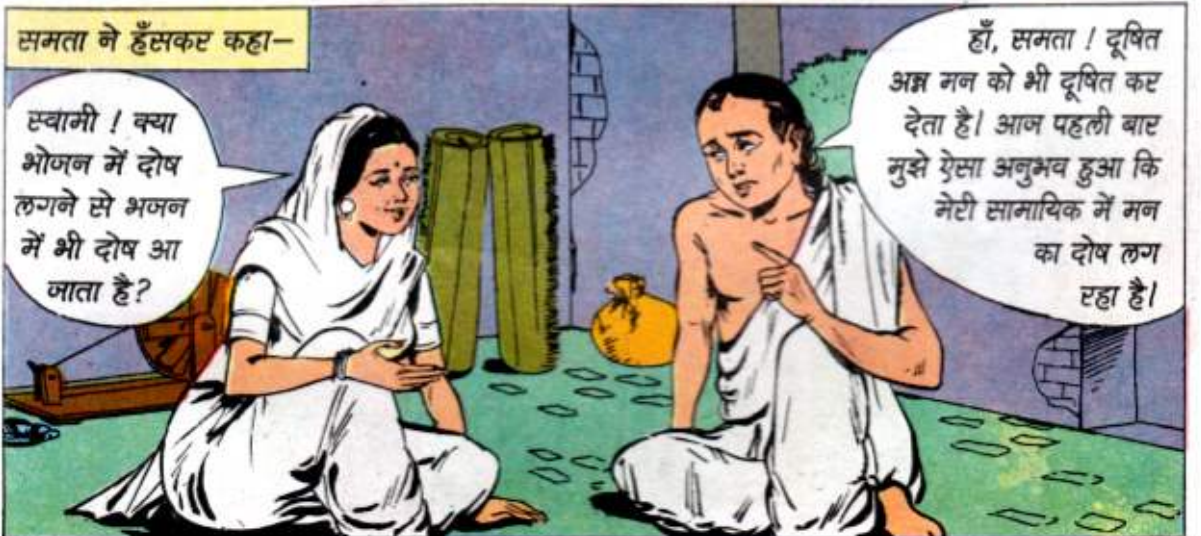


नहीं ! किसी की कही-सुनी बात तो मैं मन में रखता
ही नहीं। सामायिक करते समय तो सबका प्रतिक्रमण
कर लेता हूँ। फिर भी आज ध्यान के समय बार-बार
चित्त में व्याकुलता क्यों हो रही थी?



फिर पत्नी की तरफ
देखकर बोला—

तुम सोचो, हमारे
भोजन में तो आज कोई
दोष नहीं लगा?



समता ने हँसकर कहा—

स्वामी ! क्या
भोजन में दोष
लगने से भजन
में भी दोष आ
जाता है?

हाँ, समता ! दूषित
अन्न मन को भी दूषित कर
देता है। आज पहली बार
मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि
मेरी सामायिक में मन
का दोष लग
रहा है।